रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–71, अंक : 8, 22/25 मई 2014 तदनुसार 12 ज्येष्ठ सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

प्राणायाम के द्वारा ज्ञान

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

वीळु चिदारूजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वहिन्भिः।
अविन्द उस्त्रिया अनु। ऋ. 1/6/5

शब्दार्थ–हे **इन्द्र** =जीवात्मान्! तू **आरुजत्नुभिः**= पीड़ा देने वाले, श्रान्त करने वाले **वहिन्भिः**= जीवन धारण के कारणभूत प्राणों के द्वारा **गुहा+चित्**= छिपी हुई भी **उस्त्रियाः**= ज्ञान किरणों को **वीळु+चित्**= शीघ्रता से ही **अनु+अविन्दः**= अनुकूलता से प्राप्त करता है।

व्याख्या– थोड़े से शब्दों में प्राणयाम का महत्व बतलाया है। यहां प्राण को प्राण न कह कर वहिन् कहा गया है। लौकिक संस्कृत में वहिन् शब्द का अर्थ है आग। जब तक प्राण शरीर में रहते हैं, तभी तक शरीर में जीवनाग्नि रहता है। प्राणों ने प्रयाण किया और शरीर ठंडा पड़ गया, अतः प्राण सचमुच आग है। आग जहां सुख का साधन है, पीड़ा भी देती है। आग की पीड़ा का अनुभव गर्मी की ऋतु में पूरी तरह होता है। प्रत्येक पदार्थ सूखने लगता है। इसी प्रकार प्राण– अग्नि को जब ईंधन नहीं मिलता, तब यह शरीरस्थ मांस और रक्त को जलाने लगता है, किन्तु प्राणों का पीड़ादायकतत्व पूरा पूरा मरणसमय में ज्ञात होता है। भोग समाप्त हो चुका है। कालाग्नि प्राण पखेरू को देहपिंजरे से निकालने को आया है। प्राण के मार्ग रूके हैं, उसे राह नहीं मिल रही है, जोर लगा रहा है, तड़प रहा है। मुमुर्षु की यह दुर्दशा देख कर मुमुक्षु इन पीड़ा दायक प्राणों को वश में करता है, मृत्यु समय निकट आया जान आराम से इन प्राणों को खींच कर वह बाहर कर देता है।

वह प्राणों को आग= जलाने वाला न रहने देकर वेद का वहिन् धारक, ले चलने वाला बना देता है। अब प्राण को वहिन् बना लिया गया है, वे धारित किये गये हैं, उनकी गति रोक दी गई है, अतः वे भी धारक बन गये हैं। इस विषय में प्राण और धर्म की एक ही गति है। मारने से धर्म मार देता है, पालने से पालता है, प्राण आग बना देने से जलाता है, वहिन्=धारण करने वाला बना देने से जिलाता है। चुन लो, जीना है या जलना है?

वहिन् बन कर भी प्राण आरुजत्नु= तोड़ने–फोड़ने वाले बने हुये हैं। अब वे अंगों को नहीं तोड़ते, अब यह शरीर को पीड़ा नहीं देते, क्योंकि प्राणों की क्रिया से शरीर का सब मल शुद्ध कर लिया गया है। अब यह आत्मा पर पड़े अज्ञान–आवरण के परदे को फाड़ते हैं। इसीलिये वेद कहता है–

अविन्द उस्त्रिया अनु= आत्मन्! तू ही ज्ञान–किरणों को अनुकूलता से प्राप्त कर लेता है। योगीराज पतंजलि ने अपने अनुभव से वेद की इस सच्चाई की पुष्टि की है– **ततः क्षीयते प्रकाशावरणम्– यो.द. 2/52** प्राणायाम की सिद्धि से बुद्धिप्रकाश पर पड़ा हुआ आवरण=पर्दा नष्ट होता है।

वेद ने इससे भी अधिक बताया है–

यदा गच्छात्यसुनीतिमेतामथा देवानां वशनीर्भवाति ।ऋ. 10/16/2

जब साधक इस असुनीति=प्राणचालन–विद्या को प्राप्त कर लेता है, तब वह इन्द्रियों का वशकर्त्ता हो जाता है।

इन्द्रियों को वश में करना है तो प्राण को वश में करो। बहुत गहरा अभिप्राय है। इन्द्रियां मन के अधीन हैं। मन बहुत चंचल है, जविष्ठ है–सबसे अधिक वेगवान् है, जिधर वह जाता है, इन्द्रियां भी उधर ही जाती है। प्राणचालन–विद्या से इन्द्रियों को वश में करने का अर्थ है इन्द्रियाधिष्ठाता मन को भी वश में करना है। यही अवस्था योग है, जैसा कि कठोपनिषद में कहा है–

यदा पंचावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह।
बुद्धिश्च व विचेष्टति तामाहुः परमां गतिम्।।
तां योगमिति मन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम।।

कठो.2/3/10-11

जब मन के साथ पांचों ज्ञानेन्द्रियां रूक जाती हैं और बुद्धि भी निश्चल हो जाती हैं, उस अवस्था को परमगति कहते हैं, इन्द्रियों की उस स्थिर धारणा को योग मानते हैं। इन्द्रियां वश में करनी हों, अर्थात इन्द्रियों से यथायोग्य उपयोग लेना हो तो प्राणायाम का अभ्यास करो। बुद्धि पर से अज्ञान का पर्दा नाश करना हो, उज्जवल, विमल, धवल, ज्ञान प्रकाश प्राप्त करता हो तो प्राणायाम में सिद्धि प्राप्त करो।

प्राणायाम के महाज्ञानी ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं –जब मनुष्य प्राणायाम करता है तब प्रतिक्षण उत्तरोत्तर काल में अशुद्धि का नाम और ज्ञान का प्रकाश होता जाता है। जब तक मुक्ति न हो तब तक उसके आत्मा का ज्ञान बराबर बढ़ता जाता है। जैसे अग्नि में तपाने से सुवर्णादि धातुओं का मल नष्ट होकर वे शुद्ध होते हैं। वैसे प्राणायाम करके मन आदि इन्द्रियों के दोष क्षीण होकर निर्मल हो जाते हैं। प्राण अपने वश में होने से मन और इन्द्रियां भी स्वाधीन होते हैं। बल पुरुषार्थ बढ़ कर बुद्धि तीव्र, सूक्ष्मरूप हो जाती है कि जो कठिन और सूक्ष्म विषय को भी शीघ्र ग्रहण करती है। इससे मनुष्य शरीर में वीर्य वृद्धि को प्राप्त होकर स्थिरबल, पराक्रम, जितेन्द्रियां (प्राप्त होती हैं) सब शास्त्रों को थोड़े ही काल में समझ कर उपस्थित कर लेगा। स्त्री भी इसी प्रकार योगाभ्यास करे। प्राणायाम की महिमा में वेद, मनु, पतंजलि, दयानन्द सभी एकमत हैं।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

ब्रह्मविद्या

-ले० श्री डा. रविदत्त शर्मा एम.ए.(वेद) आर्य समाज शामली

ब्रह्माणं ब्रह्म वाहसं गीर्भिः सरवायमृग्मियम्।
'गां न दोहसे हुवे।।
ऋ. ६.४५.७

अत्यन्त वृद्धि को प्राप्त ब्रह्मस्त्रोतरूपी मन्त्रों के द्वारा वहन करने योग्य अर्चनीय सखा को कामनाओं का दोहन करने के लिये गौ की भाँति स्तुतियों के द्वारा (वेदवाणियों के द्वारा) (आवाहन करता हूँ) पुकारता हूँ।'

उक्त मन्त्र का अभिप्राय है कि जैसे गाय का दूध प्राप्त करने वाला गाय को मधुर वाणी से पुकारता है वैसे ही यदि हमें अपनी कामनाएँ पूर्ण करनी हैं तो हम भी वेदवाणी के द्वारा परमपूजनीय ब्रह्म को पुकारें, उसकी स्तुति करें। मन्त्र में कुछ तथ्य निहित हैं। हमारी कामनाएँ केवल परमात्मा द्वारा पूर्ण हो सकती है। अतः केवल उसी की स्तुति करना वेद विहित है स्तुति के द्वारा ब्रह्म का ज्ञान होता है क्योंकि ब्रह्म के गुणों का संकीर्तन करना ही स्तुति है। वेद में वर्णित गुणों के द्वारा हमें पता लग जाता है कि परमात्मा में ऐसे गुण हैं। उन गुणों की भावना करना अर्थात् प्रभु का गुणगान करना, उनको ठीक प्रकार से समझते जाना ही वास्तविक स्तुति है। ब्रह्म का अर्थ है बढ़ा हुआ। संसार में हमें जो कुछ दृष्टिगोचर हो रहा है उस सबसे बढ़कर ब्रह्म है। 'अणोरणीयान् महतो महीयान्' कहकर विचित्र तथ्य प्रस्तुत किया है। ब्रह्म महान् से भी महान् है तो वह छोटे-से-छोटा कैसे हो सकता है ? इसका समाधान ऋषि ने किया है-

एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च।।
श्वेताश्वतरोपनिषद् ६-११

'एकमात्र परमात्मदेव ही सब प्राणियों में छिपा हुआ है, सर्वव्यापी है, समस्त प्राणियों के अन्दर रमा हुआ है, सब कामों का अधिष्ठाता है, सब भूतों का निवासस्थान है। सबका साक्षी है, स्वयं चेतनस्वरूप है और सबको चेतना प्रदान करने वाला है, सर्वथा विशुद्ध है और सत्-रज-तम इन तीनों गुणों से परे है।'

इस मन्त्र में भी परमात्मा की स्तुति की गयी है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म होने के कारण ही परमात्मा सर्वव्यापक है, सर्वान्तर्यामी है। ब्रह्म के विषय में जान लेना आसान नहीं है। ब्रह्म विद्या संसार का सबसे बड़ा रहस्य है। जो लोग थोड़ा कुछ पढ़ लेते हैं और अपने को ब्रह्मज्ञानी बताते फिरते हैं, वास्तव में वे अन्धकार में हैं अर्थात् कुछ नहीं जानते। इसके विपरीत जो अपने को अल्पज्ञ समझते हैं, वे ब्रह्म के विषय में अवश्य जानते हैं-

यस्यामतं तस्य मतं मतं यस्य न वेद सः।
अविज्ञातं विजानतां विज्ञातम-विजानताम्।। केनोपनिषद् २-३

अभिमानी को ब्रह्मविद्या नहीं आती, वह कभी भी ब्रह्म का साक्षात्कार नहीं कर सकता। उसको जानते के लिये ज्ञातापन का अभिमान छोड़ना आवश्यक है। ब्रह्मविद्या एक विज्ञान है। इस विज्ञान को जो जान लेता है वह उस प्रभु की सत्ता को समझ लेता है। परमेश्वर को जानकर ब्रह्मज्ञानी को कभी शोक नहीं होता। यह ब्रह्मज्ञान का फल है। शोकरहित रहना ब्रह्मवेता का लक्षण हैं-

अशरीरं शरीरेष्यनवस्थेष्य-वस्थितम्।
महान्तं विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति।। कठोपनिषद् १.२.२२

मन्त्र में ब्रह्म के विशेषण (गुण) बताये गये हैं। वह शरीररहित है फिर भी नाशवान् शरीरों में विराजमान है। वह महान् है, विभु (सर्वव्यापक) है उसी को जानो। उसे जानने से सभी प्रकार के क्लेश दूर हो जाते हैं। उसे प्राप्त करने के लिये प्रयत्न तो बहुत लोग करते हैं, परन्तु मानवसुलभ दोषों के कारण प्रभु को प्राप्त नहीं कर पाते। जो व्यक्ति बुरे आचरण को नहीं छोड़ता, जो शान्त नहीं है, जिसकी इन्द्रियाँ संयमित नहीं हैं वह ब्रह्मविद्या की उपलब्धि का पात्र नहीं है-

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः।
नाशान्तमनसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्।।
कठोप० १.२.२४

ब्रह्मविद्या इन्द्रियों का विषय नहीं है; अपितु इन्द्रियातीत है. आत्मवान् अर्थात् आत्मा को जानने वाला ही इसका पात्र है। इसको ही मधुविद्या और अग्निविद्या भी कहा गया है। श्रुति में कहा गया है 'योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्। ओ३म् खं ब्रह्म।।'

यजु० ४०-१७

आदित्यलोक में जो पुरुष है वह मैं ही हूँ। वह ओ३म् आकाश की भाँति सर्वत्र व्याप्त है, वही ब्रह्म है। मनुष्य पृथिवी से लेकर द्युलोकपर्यन्त ईक्षण करें। समस्त सृष्टि का स्वरूप देखकर उस रचनाकार को अनुमानप्रमाण के द्वारा जानने का प्रयत्न करे। ब्रह्म के विषय में प्रसिद्ध है कि वह आदित्यलोक में उपलब्ध होता है। पृथिवी प्रकाश्यलोक है, द्युलोक प्रकाशक है। हम लोगों की पार्थिव सत्ता है अर्थात् साधारण प्राणी केवल पार्थिव विचारधारा से अपना जीवन चलाता है, वह भोगों, सुख के साधनों तक ही सीमित रह जाता है। भोगों में लिप्त होने के कारण यह जानने का प्रयत्न नहीं करता कि इन सबका मूल क्या है ? भोग अज्ञान का प्रतीक है। जो भोगों तक ही सोचता है, वह निश्चय ही अन्धकार में है, वही पार्थिव है। योगीजन आदित्य को अपना लक्ष्य बनाते हैं क्योंकि प्रकाश का साधन वही है। उनका केवल एक ही लक्ष्य होता है-'तमसो मा ज्योतिर्गमय'। आत्मा का अध्यवसाय यही है कि वह अन्धकार से प्रकाश की ओर, असत् से सत् की ओर तथा मृत्यु से अमृत की ओर सतत् प्रयत्नशील है। जो प्राणी केवल शरीरस्थ हैं उन्हें आत्मा का कुछ पता नहीं चलता। इसको जानने के लिये आदित्यलोक तक पहुँचना आवश्यक है।

शास्त्रों में आदित्यलोक की बड़ी प्रशंसा की गयी है। आदित्य के द्वारा ही आत्मा को प्रकाश मिलता है। भोगी लोग भोगों के उपस्थित होने पर अपने को धन्य मानते हैं क्योंकि उनके ज्ञान का स्तर सीमित है। वे पृथिवी के उपासक हैं। पुनः जन्म लेने पर भी उन्हें पृथिवीलोक ही मिलेगा, उनकी विचारधारा भोगों तक ही रहेगी। आदित्य का उपासक कभी अन्धकार को स्वीकार नहीं करता, उसे शाश्वत प्रकाश व ज्ञान चाहिये। उपनिषद् के ऋषि ने संकेत किया है-'अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते।' जिसके द्वारा परब्रह्म अविनाशी परमात्मा का तत्वज्ञान होता है वह परा विद्या है। ब्रह्म के विषय में बताया गया है कि वह ज्ञानेन्द्रियों से जाना नहीं जाता, कर्मेन्द्रियों से पकड़ा नहीं जाता, गोत्र-वर्ण-रूप-रंग और आकृति से सर्वथा रहित है। वह अत्यन्त सूक्ष्म, व्यापक, अन्तरात्मा सब में फैला हुआ है। वही अक्षर अर्थात् अविनाशी है। वह समस्त प्राणियों का कारणरूप है। ब्रह्म अमृतस्वरूप है। उसका साक्षात्कार होने पर योगी को भूख-प्यास नहीं लगती क्योंकि वह उस अमृतत्व को प्राप्त कर तृप्त हो जाता है-

'न वै देवा अश्नन्ति न पिवन्ति एतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति'।।
छान्दोग्य उप० ३.६.१

अमृतत्व का यही प्रभाव है कि उसको प्राप्त कर लेने पर संसार के किसी पदार्थ की आवश्यकता नहीं रहती। ज्ञानी अपने ज्ञान से ही पूर्ण तृप्त हो जाता है। योगीजन ही आत्मदर्शन के पात्र होते हैं। ब्रह्मार्पित हो जाने पर पार्थिव शरीर दिव्य हो जाता है। उसके लिये फिर कुछ नहीं करना होता। सभी चेष्टाओं का व्यापार अवरुद्ध हो जाता है। योगी के लिये कोई भी वस्तु प्राप्त करने के योग्य नहीं रह जाती। इस रहस्य को जान लेने पर उस योगी के लिये न तो सूर्य उदय होता है न अस्त होता है; उसके लिये सर्वदा दिन ही रहता है-

न ह वा अस्मा उदेति न निम्लोचति सकृद्।
दिवा है वास्मै भवति य तामेवं ब्रह्मोपनिषदं वेद।।
छान्दोग्य० ३.११.३

दिन और रात्रि साधारण लोगों के लिये होते हैं। योगी के जीवन में सदैव प्रकाश ही प्रकाश रहता है। ब्रह्मविद्या के तत्त्वों का वर्णन केन उपनिषद् में मिलता है-

तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमाय-तनम्।। केनोपनिषद् ४-८

उस ब्रह्मविद्या के तपस्या-इन्द्रियदमन-कर्त्तव्य परायणता ये तीनों आधार हैं। वेद उसके अङ्ग हैं। सत्यस्वरूप परमेश्वर उसका अधिष्ठान है। सब रहस्य परमात्मा की कृपा से ही खुलते हैं। जो ऐसा जान लेता है वह सुखमयलोक में प्रतिष्ठित होता है। जो जिज्ञासु सावधान होकर अपनी बुद्धि को निरन्तर विवेकशील बनाये रखता है और उसके द्वारा मन को रोककर पवित्र भाव में स्थित रहता है अर्थात् इन्द्रियों के द्वारा परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार पवित्र कर्मों का निष्काम भाव से आचरण करता है तथा अपने आपको प्रभु के प्रति अर्पित कर राग-द्वेषरहित होकर शरीर निर्वाह के लिये भोगों को भोगता है वह परमेश्वर के उस परम धाम को प्राप्त कर लेता है जहाँ से फिर लौटना नहीं होता। जो परमेश्वर भूतकाल, भविष्यत् काल, वर्तमान काल तथा सम्पूर्ण जगत् का अधिष्ठाता है और जो केवल सुखस्वरूप है उस ज्येष्ठ ब्रह्म को हमारा नमस्कार है-

यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।।
अथर्व० १०.८.१

सम्पादकीय.....

चरित्र निर्माण और आधुनिक युवक

चरित्र का निर्माण करना अत्यन्त आवश्यक है। जिस देश और जाति का चरित्र उच्च नहीं, वहां आलस्य और प्रमाद बढ कर अशान्ति का साम्राज्य हो जाया करता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जो जातियां चरित्रहीन हो गई उनका संसार में कोई अस्तित्व नहीं रहा। वास्तव में चरित्र की रक्षा करना एक राष्ट्र के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य है। मनु जी ने कहा है आचारः परमो धर्मः अर्थात् चरित्र को उच्च बनाना परम धर्म है। जो व्यक्ति चरित्रहीन होता है वह समाज से प्रतिष्ठा और यश दोनों को नष्ट कर देता है, साथ ही वह सच्चे सुख और शान्ति को भी अनुभव नहीं कर सकता। अतः विद्यार्थी काल से ही चरित्र निर्माण पर ऋषि मुनियों ने विशेष बल दिया है। यजुर्वेद भी इसी बात का प्रतिपादन करता है- तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु अर्थात् मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो। वस्तुतः शुभ विचार ही चरित्र निर्माण का मुख्य साधन है शुभ विचार विद्यार्थी जीवन का प्राण है। उसका शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास इसी आधार पर हुआ करता है और यही चरित्र उज्वल बनाने की भावना विद्यार्थी को ऊंचाईयों के शिखर तक पहुंचाने वाली है। संसार में जितने भी महापुरूष हुए हैं उन्होंने चरित्र को ही अपनी संपत्ति समझा है। मनुष्य अपने विद्यार्थी जीवन में जितना अपने चरित्र को उज्वल बना लेता है, अपने आपको बुराईयों से बचाकर रखता है, उतना ही उसका जीवन पवित्र और श्रेष्ठ बनता है। हमारी संस्कृति में विद्यार्थी को शिक्षा दी जाती थी कि सत्यं वद धर्मं चर अर्थात् सत्य बोलना और धर्म का आचरण करना । जीवन में कितनी ही विपत्तियां आए, कितने ही कष्ट सहन करना पड़े मनुष्य सत्य बोलने और धर्म का पालन करने में पीछे न हटे। आज लोग सत्य बोलने के कारण राजा हरिशचन्द्र को सत्यवादी राजा हरिशचन्द्र के नाम से याद करते है और उनके जीवन के उदाहरण दिए जाते हैं और मर्यादा का पालन करने के कारण लोग श्रीराम को मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के नाम से याद करते हैं। चरित्र की महानता के कारण ही हमारा देश ऋषि, मुनियों तथा गुरूओं की धरती रहा है। सारे संसार के लोग आध्यात्मिक शांति प्राप्त करने के लिए , सत्य और धर्म का पालन करने की शिक्षा लेने के लिए हमारे देश में आते थे और अपने आपको धन्य मानते थे। पाश्चात्य संस्कृति के कारण आज का विद्यार्थी वर्ग अपने चरित्र का ध्यान करने के बजाय फैशन की ओर झुक रहा है। इसी कारण आज बुराईयां बढ रही हैं। युवा पीढ़ी के पथभ्रष्ट होने के कारण राष्ट्र का भविष्य अंधकारमय हो जाता है। इसलिए युवा वर्ग को विद्यार्थी काल में फैशन के बजाय अपने चरित्र की ओर ध्यान देना चाहिए। विद्यार्थी को फैशन से दूर रहकर सरलता का जीवन व्यतीत करना चाहिए क्योंकि सरलता सदाचार की जननी है और श्रृंगार कामवासना का दूत है। जो व्यक्ति कामनाओं का उपभोग करके उसे समाप्त करना चाहते हैं उनके लिए भर्तृहरि का प्रसिद्ध श्लोक है-

भोगो न भुक्तो वयमेव भुक्तः, तपो न तप्तः वयमेव तप्तः।
कालो न यातो वयमेव यातः, तृष्णा न जीर्णः वयमेव जीर्णः।।

अर्थात् संसारिक भोगों को भोगते-भोगते मनुष्य का सारा जीवन निकल जाता है फिर भी संसारिक भोग समाप्त नहीं होते है। इसीलिए विषय रूपी अग्नि भोगने से शान्त नहीं होती अपितु बढ़ती जाती है। आज छात्रों के अन्दर चरित्रहीनता का नग्न प्रदर्शन हो रहा है। पाश्चात्य सभ्यता के प्रवाह में आज का नवयुवक बहा जा रहा है। आज के विद्यार्थी को अपनी संस्कृति और महापुरूषों का ज्ञान होने के बजाय अभिनेता और अभिनेत्रियों का ज्यादा ज्ञान है। इसी कारण प्रतिदिन समाचारपत्रों में अनेक चरित्रहीनता की घटनाएं प्रतिदिन पढ़ने को मिलती हैं। अगर हम चरित्र के उज्वल उदाहरण को देखना चाहते हैं तो प्राचीन काल के संस्कृत साहित्य के रामायणादि ग्रन्थों को उठाकर पढ़े और लक्ष्मण के चरित्र को देखें-

नाहं जानामि केयुरे, नाहं जानामि कुंडले।
नुपुरे तु अभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्।।

जब दुष्ट रावण माता सीता को चुरा कर ले गया तो उन्हें ढूंढते समय कुछ आभूषण प्राप्त हुए और राम ने उन आभूषणों को पहचानने के लिए कहा, उस समय लक्ष्मण ने कहा कि मैं हाथ और कान के आभूषणों को नहीं पहचानता केवल पैर के आभूषणों को पहचानता हूं क्योंकि मैं नित्य प्रति उनकी चरण वन्दना किया करता था। महर्षि दयानन्द के जीवन की भी चरित्र से सम्बन्धित ऐसी अनेक घटनाएं हैं जिनसे मनुष्य शिक्षा ले सकता है।

आज अगर किसी ओर ध्यान देने की आवश्यकता है तो वह है चरित्र निर्माण। चरित्र निर्माण के द्वारा ही राष्ट्र नई ऊंचाईयों को छू सकता है। आज देश को उन्नत करने के लिए अनेक प्रकार की योजनाएं बनाई जाती हैं, सब प्रकार की सुख सुविधाओं के साधन तैयार किए जाते हैं परन्तु इन सुख सुविधाओं का भोग करने वाले के चरित्र की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। इसी कारण आज तमाम सुख के साधनों के होने पर भी भ्रष्टाचार बढ़ रहा है, जमीन जायदाद के लिए भाई-भाई की हत्या कर रहा है, लूटपाट, हत्या, डकैती जैसे अनेक अपराध दिन प्रतिदिन बढ रहे हैं। इसलिए आज इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है कि कहां पर हमारी शिक्षा पद्धति में कमी है। इसी कमी को पूरा करने के लिए आज की शिक्षा पद्धति में बदलाव करना आवश्यक है। आज की शिक्षा पद्धति में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य विषय बनाना चाहिए ताकि विद्यार्थी को दूसरे विषयों के ज्ञान के साथ-साथ नैतिक शिक्षा का भी ज्ञान हो सके और वह व्यवहारिक जीवन में काम आने वाली जैसे सत्य बोलना, माता-पिता की सेवा करना, ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का पालन करना तथा चरित्र निर्माण सम्बन्धी बातों को सीख सके। यदि राष्ट्र एवं समाज ने नवयुवकों के चरित्र निर्माण की ओर ध्यान नहीं दिया तो राष्ट्र का अपना आधार निर्बल होने से यह स्वराज्य का भवन अधिक समय तक स्थिर नहीं रह सकेगा और भारत का भविष्य उज्वल नहीं हो सकेगा। देश के नवयुवक भी इस ओर आगे बढ़े और अपने भावी उत्तरदायित्व का ध्यान रखते हुए अपने राष्ट्र को आदर्श बनाएं।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

मृत्यु के भय से मुक्ति

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून 196/2 चुक्खूवाला, देहरादून

(गतांक से आगे)

अब आगे हम अपने मनुष्य जन्म के उद्देश्य पर विचार करते हैं। मनुष्य जन्म हमें क्यों दिया गया? शास्त्र व शब्द प्रमाण इस बारे में क्या कहते हैं, आईये इसे जान लेते हैं। वेद आदि शास्त्र एवं शब्द प्रमाण कहते हैं कि हमें यह जन्म संसार के बनाने व चलाने वाले ईश्वर, स्वयं की जीवात्मा व प्रकृति व इससे बने संसार को जानने एवं अपने पूर्व कर्मों का फल भोगने के लिए मिला है। इसके अतिरिक्त नये पुण्य कर्मों को करते हुए, ईश्वर-जीवात्मा-प्रकृति का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर ईश्वरोपासना व योगाभ्यास द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार कर मोक्ष व मुक्ति की प्राप्ति आदि करना ही हमारे मनुष्य जीवन का लक्ष्य है। जब तक हम ईश्वरोपासना व ईश्वर साक्षात्कार में सफल नहीं होंगे, आवागमन अर्थात् जन्म व मृत्यु चक्र चलता रहेगा। एक जन्म ही नहीं अपितु हजारों, लाखों बार जन्म लेने पर भी यदि हमने ईश्वरोपासना में सफलता न पायी और हमारा मोक्ष न हुआ तो बार-बार, हर जन्म में, मृत्यु से होकर गुजरना पड़ेगा। जिस व्यक्ति को यह बात समझ में आ जाती है अर्थात् उसे इसका ज्ञान हो जाता है तो फिर वह संसार के कामों को करते हुए, अपने पारिवारिक कर्त्तव्यों को निभाते हुए, ज्ञान व विवेक पूर्वक ईश्वरोपासना व योगाभ्यास में लग जाता है और धीरे-धीरे सफलता की ओर बढ़ने लगता है। यह आवश्यक नहीं की इस जन्म में ही पूर्ण सफलता मिल जायेगी परन्तु चिन्ता करने वाली कोई बात नहीं है। हम इस जन्म में जो आध्यात्मिक पूंजी अर्जित कर लेंगे वह संचित रहेगी और अगले जन्मों में वह पूर्व जमा पुण्य राशि के रूप में मिलेगी और उस जन्म में और ईश्वरोपासना एवं पुण्य अर्जित कर हम ईश्वर साक्षात्कार के निकट पहुंच सकेंगे या कर लेंगे। लक्ष्य प्राप्ति तक यह क्रम चलता रहेगा, इसे हमें समझना है। लक्ष्य की प्राप्ति हो जाने पर हमें जो मोक्ष मिलेगा उसका भी शब्द व शास्त्रीय प्रमाण हमारे पास है। आप्त पुरूष ऋषियों ने मोक्ष की अवधि ईश्वर के एक हजार वर्ष के बराबर उल्लिखित की है। ईश्वर का एक दिन 864 करोड़ वर्ष का होता है। अत: मुक्ति की अवधि 864×365×1000= 31,53,60,000 करोड़ वर्ष होती है। इतने वर्षो तक जीवात्मा का जन्म व मृत्यु नहीं होता। जीवात्मा अपने सनातन सखा परमात्मा के साथ रहता है। परमात्मा आनन्द स्वरूप है। जीवात्मा भी आनन्द से जुड़ कर आनन्दयुक्त हो जाता है अर्थात् ईश्वर उसे आनन्दयुक्त कर देता है। मुक्ति की अवस्था में सर्वशक्तिमान ईश्वर मुक्त जीव को नाना प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न भी करता है। मुक्ति की अवस्था में जीवात्मा निठल्ला या खाली या आलसी नहीं रहता अपितु हर क्षण आनन्द पूर्वक प्रसन्न रहता है और ईश्वर से प्राप्त दिव्य शक्तियों का उपभोग करते हुए एक शौर्य मण्डल से दूसरे और पूरे ब्रह्माण्ड में ईश्वरीय रचना को देख कर और अपने समान जीवात्माओं को कर्म करते हुए देख कर अपनी मुक्ति की अवधि को भोगता है। मुक्ति की अवस्था में उसे सभी साधन उपलब्ध होते हैं और वह जो भी सत्कामना करता है, वह पूरी हो जाती है। इतनी अवधि तक मृत्यु के दु:ख से दूर रहने और पूर्ण आनन्द से सम्पन्न रहने के लिए यदि ईश्वरोपासना कोई करता है, और ईश्वरोपासना के काल में भी वह आनन्द से युक्त रहता ही है, ऐसा सभी आप्त पुरूषों का अनुभव है। क्या यह जानकर ईश्वर भक्ति की लगन नहीं लगेगी और मृत्यु का दु:ख दूर नहीं होगा ? इस मार्ग पर चलते हुए जब मृत्यु आती है तो वह ईश्वर में स्वयं का ध्यान लगाकर सुख व दु:ख से सर्वथा रहित हो जाता है। यह विश्लेषण बताता है कि ईश्वरोपासक का मृत्यु का दु:ख तो दूर हो गया, अब तो आज और अभी से ईश्वरोपासना को जारी रखते हुए समाधि का आनन्द लेना है और जब मृत्यु आयेगी तो ईश्वर में ध्यानावस्थित होकर प्राण त्याग देने हैं। प्राण त्यागने व मृत्यु की इस अवस्था में व्यक्ति को कोई दु:ख नहीं होगा यह विश्लेषण से सिद्ध है। उस स्थिति में अगला जन्म प्राप्त करने और ईश्वर का साक्षात्कार करने की जल्दी भी हो सकती है जो कि मृत्यु पर विजय योगाभ्यासी या ईश्वरोपासक को होने की सूचक है।

आगे चल कर हम देखते हैं कि स्वामी जी ने वेद प्रचार का अद्भूत व अद्वितीय कार्य किया। उनकी मृत्यु का दृश्य भी उल्लेखनीय बन गया। उनके द्वारा सत्य के प्रचार से चिढ़ कर उनके विरोधियों ने उन्हें विष दे दिया। मृत्यु अर्थात् प्राण छोड़ते समय उनके हाव-भाव या कथनों में किसी प्रकार का विषाद नहीं था। वह गम्भीर बने हुए थे। उन्होंने मृत्यु से पूर्व अपने अनुयायियों से दिन, वार व माह पूछा था। कार्तिक अमावस्या का दिन 30 अक्तूबर सन् 1883 ई. था और उस दिन दीपावली थी। ईश्वर से मिलने के लिए उन्होंने नाई को बुला कर क्षौर कर्म कराया और नये वस्त्र धारण किये। ईश्वरोपासना की और अन्त में ईश्वर से संवाद करते हुए कहा कि हे ईश्वर, तैने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो। इसके बाद उन्होंने लम्बा श्वास लिया और प्राण छोड़ दिये। रोग के दिनों में उन के चेहरे पर कभी विषाद का कोई चिन्ह नहीं देखा गया। वह न निराश हुए न हताश। महाभारत काल के लगभग 5,000 वर्ष बाद ईश्वर के सच्चे स्वरूप का प्रचार करने वाले वह पहले व्यक्ति थे। असह्य पीड़ा होने पर भी न तो उन्होंने कभी हाय-हाय की और न किसी प्रकार की चीख-पुकार की और न ईश्वर के प्रति कोई शिकायत की। कह नहीं सकते कि विषपान और रोग की अवस्था में बिताये गये दिन क्या उनके किसी प्रारब्ध के कारण थे या यह ईश्वर की ओर से उनकी कोई कठिन अग्नि-परीक्षा थी। यदि परीक्षा थी तो स्वामी दयानन्दजी उसमें उत्तीर्ण हुए थे, ऐसा साक्ष्य उनकी मृत्यु की घटना से मिलता है। एक परम ईश्वर भक्त ही इस प्रकार स्वेच्छा से प्राण त्याग कर मृत्यु को गले लगा सकता है। स्वामी जी के जीवन की एक अन्य घटना लेते हैं।

स्वामीजी जब मथुरा में गुरू विरजानन्दजी से पढ़ते थे तो एक बार गुरू की कुटिया की सफाई करते हुए उन्होंने कूड़े को एक स्थान पर समेट कर रख दिया। सोचा कि कुछ देर बाद, अवकाश मिलने पर, इसे अन्यत्र फैंक दूंगा। अनायास तभी गुरूजी उधर आ निकले तो उनका एक पैर उस कूड़े से जा लगा। गुरूजी के स्वभाव में कुछ क्रोध का अंश होता था। उन्होंने स्वामी दयानन्द को पुकारा और हाथ में एक छड़ी, जिसका आगे का भाग लोहे का था, उससे स्वामीजी की गलती पर प्रहार किया। उस प्रहार से स्वामीजी के शरीर पर घाव हो गये। गुरूजी के इस व्यवहार पर स्वामीजी ने उनसे करबद्ध होकर क्षमा प्रार्थना करते हुए कहा कि गुरूजी अपने इस शिष्य को क्षमा करें। भविष्य में वह ध्यान रखेगें कि फिर उनसे ऐसी गलती न हो। घाव कुछ दिन बाद ठीक हो गया। दयानन्दजी के जीवन चरित में आता है कि भावी जीवन में जब कभी उनका ध्यान उस घाव के निशान पर चला जाता था तो उस घटना को याद कर वह गुरूजी की उनके प्रति जो कृपा, स्नेह और आशायें थी, उसे याद करके द्रवित हो जाते थे। यहां हमारा विचार है कि जब स्वामी दयानन्द ने गुरू की उस अतार्किक पिटाई पर बुरा नहीं माना था तो उन्हें मृत्यु से पूर्व विषपान के कारण जो भयंकर पीड़ा हुई उसके लिए भी वह ईश्वर से क्या शिकायत करते? इससे पूर्व भी कई बार उनको विष दिया गया था और अनेक अवसरों पर लोगों ने उनके प्रति अपमानजनक कृत्य किए थे, पर उन्होंने कभी किसी का बुरा नहीं माना और ऐसा करने वालों का हमेशा कल्याण चाहा, अस्तु। विषपान की उस भयंकर पीड़ा को भी उन्होंने मौन रह कर सहन किया परन्तु ईश्वर से इसकी कभी कोई शिकायत नहीं की। उन्होंने शायद यही सोचा होगा कि यह पीड़ा भी ईश्वर की कोई कृपा या फिर परीक्षा है। इस घटना को याद कर भजन की यह पंक्तियां स्मृति पटल पर उभरती हैं, 'प्रभु जब कष्ट देता है तो घबराना नहीं चाहिये।' वस्तुत: महर्षि दयानन्दजी का जीवन धन्य था और हमें प्रसन्नता है कि वह हमारे और अपने अनुयायियों के आदर्श हैं। उन जैसा व्यक्ति सम्भवत: विश्व के इतिहास में दूसरा नहीं हुआ।

हम सब को एक न एक दिन मरना है। दु:ख भी सबको कुछ न कुछ होगा ही। क्यों न हम मृत्यु के स्वरूप को जानकर मृत्यु पर विजय प्राप्त करें जैसा कि स्वामी दयानन्द जी ने किया। इसके लिए हमें वेदों की शरण में जाना होगा जो बताते हैं कि योगाभ्यास कर ईश्वर को प्राप्त करो और सारे संसार से अज्ञान को दूर करो। इस मार्ग पर चल कर ही हमारा जीवन सफल होगा और हम मृत्यु पर विजय प्राप्त कर पायेगें और मृत्यु का दु:ख हमें विचलित नहीं कर पायेगा।

अतिथि सत्कार तथा उससे लाभ-अथर्ववेद

-शिव नारायण उपाध्याय 73, शास्त्री नगर दादाबाड़ी कोटा

वैदिक वाङ्मय में अतिथि को देवता माना जाता है और इसलिए परिवार में जब कोई अतिथि आता है तो उसको बड़ा सम्मान दिया जाता है। उसके लिए भोजनादि की विशेष व्यवस्था की जाती है तथा इस बात का ध्यान रखा जाता है कि उसे किसी भी प्रकार से कोई असुविधा न होवे। परिवार के लोग उससे विभिन्न विषयों पर वार्तालाप कर उसके ज्ञान से अपने ज्ञान में बढ़ोत्तरी करते हैं।

अतिथि सत्कार के विषय में जैसा विस्तृत वर्णन अथर्ववेद में हुआ है वैसा वर्णन अन्यत्र कहीं भी मेरे पढ़ने में नहीं आया। अथर्व वेद काण्ड 15 के सूक्त संख्या 10 से लेकर 18 तक इसी विषय पर चर्चा की गई है। कुल 102 मंत्रों में इसी विषय पर गहन विचार विमर्श हुआ है। हम उसमें से कुछ मंत्रों को आधार बनाकर इस विषय पर पाठकों को कुछ बताने का प्रयत्न कर रहे हैं।

अथर्ववेद कहता है, जब ब्रह्म वेत्ता, सदाचारी, योगपुरूष जब किसी राजा से मिलने उसके घर पर आवे तब राजा यह विचार करे कि अतिथि मुझसे अधिक ज्ञानवान, सदाचारी तथा ब्रह्म को जानने वाला है उसका सत्कार करे। इससे राजा को कोई दोष नहीं लगता है और न ही राज्य के ऊपर भी कोई दोष आता है।

यहां यह दोष लगने वाली बात इसलिए आई है कि सामान्य तथा राजा अथवा सर्वोच्च शासक को राज्य का प्रथम पुरूष माना जाता है अत: वह सभी के द्वारा सम्मानित है तब वह अतिथि का सम्मान करने आगे क्यों आवे तथा राजा का अपमान सम्पूर्ण प्रजा का अपमान माना जाता है तो राजा कोई ऐसा कार्य क्यों करे क्यों किसी व्यक्ति को सम्मानित कर प्रजा का निगाह में नीचे गिरे परन्तु यह सोच ठीक नहीं है! उसका सम्मान करने से राजा छोटा नहीं हो जाता वरन् उसकी इस क्रिया से तो वह जनता में और अधिक लोकप्रिय हो जाता है।

राजा को ऐसे वेद वेत्ता लोगों को सत्कारित कर यह जानना चाहिए। इसलिए अथर्ववेद में कहा गया है, इस अतिथि सत्कार से निश्चित रूप से ब्रह्म ज्ञानी कुल और क्षत्रिय कुल दोनों की उन्नति होती है, दोनों ऊँचे उठते हैं। वे दोनों विचार विनिमय कर तय करें कि हमें सबकी उन्नति के लिए क्या करना चाहिए। इस अतिथि सत्कार से निश्चय करके ब्रह्म ज्ञानी कुल बड़े-बड़े प्राणियों के रक्षक गुण में ही प्रवेश करता है और उसी प्रकार अतिथि सत्कार से निश्चय करके क्षत्रिय कुल परम ऐश्वर्य में प्रवेश करता है। अतिथि ब्रह्मवेत्ता को इस प्रकार उपदेश करना चाहिए।

ब्रह्म ज्ञान और प्रजा पालन का ज्ञान यदि संयुक्त हो जावे तो निश्चित रूप से प्रजा का हर दृष्टि से विकास होता है और राजा भी सूर्य समान तेजस्वी बन जाता है। इस दृष्टिकोण को सम्मुख रख कर वेद का कथन है, यह अग्नि समान तेजस्वी निश्चय करके ब्रह्म ज्ञानी समूह की है और वह सूर्य समान प्रतापी क्षत्रिय समूह है।

इसी प्रकार सामान्य गृहस्थ भी ब्रह्म वेत्ता अतिथि का सम्मान करके ब्रह्म वर्चसी बने। इस विषय पर वेद का उपदेश है, उस ब्रह्मज्ञानी समूह से मिलकर वह गृहस्थ ब्रह्मवर्चस्वी बन जाता है।

अगले सूक्त में वर्णन है कि ब्रह्मवेत्ता अतिथि का सत्कार-सत्कार कैसे करें ?

वेद उपदेश करता है कि, जब व्यापक परमात्मा को जानने वाला सद् व्रतधारी अतिथि किसी गृहस्थ के घर पर आवे तो गृह स्वामी स्वयं उठकर आगे जाकर अतिथि का सम्मान करते हुये कहे, हे अतिथि देव। आप कहां से आ रहे हैं ? रात्रि को कहां विराजमान थे? फिर उसको जल देकर कहे, यह जल लीजिए। हे व्रात्य आप हमें तृप्त करें और यह जल आपको तृप्त करें। हे व्रात्य। आपकी क्या आज्ञा है ? जैसी आपकी आज्ञा होगी वैसा ही हम करेंगे। हे व्रात्य। जिसमें आपको प्रधानता मिले, आराम मिले वैसा ही हम करेंगे।

फिर गृहस्थ लोग अतिथि को उनके प्रिय पदार्थ अर्पण करे। वेद कहता है, जब गृहस्थ उस अतिथि से नम्रतापूर्वक कहता है कि हे उत्तम व्रतधारी। जैसा भोजनादि पदार्थ आपको प्रिय लगे वैसा ही हम करना चाहते हैं। ऐसा कहकर वास्तव में वह गृहस्थ अपने प्रिय पदार्थ (ब्रह्म ज्ञान) को सुरक्षित कर लेता है।

अतिथि की सेवा करने से गृहस्थ को अपना प्रिय पदार्थ प्राप्त हो जाता है और वह इष्ट मित्रों का भी प्रिय बन जाता है जो ऐसे अतिथि को जानता है।

गृहस्थ को चाहिए कि आप्त विद्वान् अतिथि का अनेक प्रकार से सत्कार करके उन्नति की अपनी कामनाओं को पूर्ण करे। वेद का कथन है, उस गृहस्थ को लालसा आकर मिलती है। वह लालसा की निरन्तर पूर्ति में मग्न होता है जो गृहस्थ ऐसे विद्वान् को जानता है।

जिस समय यदि आप कोई काम कर रहे हैं और अतिथि आ जावे तो आपका कर्त्तव्य है कि वे उस कार्य को स्थगित कर दें अथवा अतिथि की आज्ञा लेकर उसे पूर्ण करें।

वेद का उपदेश है कि, यदि व्यापक परमात्मा को जानता हुआ कोई व्रात्य (सत्य व्रतधारी अतिथि) उस समय आ जावे जब आप यज्ञ कर रहे हैं और ऊँची उठी अग्नि की लपटों के बीच हवन सामग्री की आहुति दे रहे हैं तब भी आप उठकर ब्रह्मज्ञानी अतिथि को सम्मान देते हुए विनम्रता से कहे, हे व्रात्य। कृपया आज्ञा दीजिए कि मैं हवन पूर्ण कर लूं।

फिर यदि वह अतिथि आज्ञा देवे तो गृहस्थ हवन को पूर्ण करे आज्ञा न देवे तो गृहस्थ यज्ञ भी न करे। आगे वेद कहता है, कि जो गृहस्थ व्यापक परमात्मा को जानते हुए भी व्रात्य (सत्य व्रतधारी अतिथि) के द्वारा आज्ञा दिया जाने पर यज्ञ करता है, वह गृहस्थ पितरों (पालन कर्ता बड़े लोगों) के चलने योग्य मार्ग को अच्छी प्रकार जान लेता है और देवताओं के चलने योग्य मार्ग को भली प्रकार जान लेता है। वह विद्वानों के बीच तनिक भी दोषी नहीं होता है। यह गृहस्थ का यज्ञ वास्तव में यज्ञ होता है।

इस संसार में उस गृहस्थ की मर्यादा सब प्रकार शेष रह जाती है जो गृहस्थ व्यापक परमात्मा को जानते हुए व्रात्य (सत्य व्रतधारी अतिथि) की आज्ञा दिया हुआ होकर यज्ञ करता है।

अगले मंत्रों में इसके विपरीत कार्य करने वाले गृहस्थ को कुमर्यादित मानकर कहा गया है कि उसके शुभ कार्य सिद्ध नहीं होते हैं। अतिथि के सत्कार के विषय में तो हमने पर्याप्त जानकारी प्राप्त कर ली है परन्तु हमें अतिथि से क्या सीखना है इस पर विचार करते हैं। इस विषय में भी अथर्व वेद में कई बातें बताई गई हैं जो हमें अतिथि से सीख लेनी चाहिए। इस विषय पर वेद का कहना है, यदि व्यापक परमात्मा को जानने वाला सत्य व्रतधारी अतिथि गृहस्थ के यहां एक रात्रि ही निवास करे तो गृहस्थ उससे पृथ्वी पर जो दर्शनीय समाज है उन समाजों के विषय में अतिथि से निश्चित रूप से जानकारी लेवे। अतिथि सत्कार के फल स्वरूप गृहस्थ इस जानकारी प्राप्त करने को सुरक्षित कर लेता है। गृहस्थ का भाव यह रहे कि अतिथि अधिक से अधिक दिन उसके घर में निवास करे। यदि ऐसा हो जावे तो, यदि व्यापक ब्रह्म को जानता हुआ व्रात्य दूसरी रात्रि गृहस्थ के घर में बस जाता है तो गृहस्थ उससे अन्तरिक्ष में जो पवित्र लोक हैं उनके विषय में निश्चित रूप से प्रश्न करके अन्तरिक्ष लोकों का ज्ञान भी सुरक्षित कर लेवे।

अधिक आग्रह करने पर अतिथि तीसरी रात्रि भी गृहस्थ के पास ठहर जावे तो गृहस्थ को उससे ज्योतिष विद्या का ज्ञान प्राप्त कर लेने का प्रयत्न करना चाहिए। अतिथि द्वारा ज्योतिष विद्या का ज्ञान प्राप्त कर लेने का प्रयत्न करना चाहिए। अतिथि द्वारा ज्योतिष विद्या को फिर अपने लिए सुरक्षित भी कर लेना चाहिए।

वेद की आज्ञा का पालन करने वाला व्रात्य किसी भी गृहस्थ के पास तीन दिन से अधिक निवास नहीं करता है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पृष्ठ 5 का शेष- अतिथि सत्कार.....

गृहस्थ को चाहिए कि वह अतिथि के हर कार्य का सूक्ष्म निरीक्षण करता रहे इससे उसे उत्तम सभ्यता का ज्ञान अनायास प्राप्त हो जावेगा। यदि कभी मनुष्यों को किसी बड़े विद्वान् का सानिध्य लम्बे समय के लिए प्राप्त हो जावे तो वह उससे ब्रह्म विद्या, राज्य विद्या आदि अनेक शुभ विद्याएं प्राप्त कर अपनी उन्नति करे।

वेद में कहा गया है, यदि व्यापक परमात्मा को जानने वाला व्रात्य कई रात्रियों के लिए किसी गृहस्थ के घर में निवास करता है तो निश्चय करके जो असंख्य पवित्र लोक हैं उनके विषय में गृहस्थ अतिथि से ज्ञान प्राप्त कर उसे सुरक्षित रखे।

ब्रह्मज्ञानी विद्वान् अतिथि अपने लगातार सदुपदेशों, सत्कर्मों और सत् पराक्रमों से लोगों को बलवान बना कर संसार की रक्षा करता है।

फिर आगे कई मंत्रों में बताया गया है कि व्रात्य सत्य व्रतधारी अतिथि हमें किस प्रकार रक्षित कर देता है। व्रात्य हमको नाना प्रकार की ओषधियों के विषय में भी ज्ञान देता है।

उसका देशाटन वेद विद्या के प्रचार के लिए ही होता है। वह गृहस्थ को शरीर विज्ञान के विषय में भी बताता है। वह शरीर के भीतर जाने वाले सात प्राण और शरीर से बाहर निकलने वाले सात अपान और सम्पूर्ण शरीर में फैले हुये सात व्यान के विषय में भी गृहस्थ को ज्ञान देता है।

वेद में इनको एक-एक कर बताया भी गया है परन्तु यहां विषय के विस्तार के भय से उसे छोड़ देते हैं। ऐसे ब्रह्म ज्ञानी व्रात्य का सामर्थ्य भी बहुत अधिक होता है वेद में उसके सामर्थ्य का भी पर्याप्त वर्णन हुआ है। व्रात्य लगातार उन्नति करता है। वेद में कहा गया है, व्रात्य (सत्य व्रतधारी अतिथि) दिन के साथ सामने जाने वाला और रात्रि के साथ आगे को चलने वाला है। व्रात्य को गृहस्थ का नमस्कार होवे।

श्रेष्ठतम कार्य ही यज्ञ है

आर्य समाज गायत्री विहार के तत्वावधान में आओ यज्ञ करें कार्यक्रम के अन्तर्गत हाडौती राठौर समाज छात्रावास दादाबाडी में देवयज्ञ का आयोजन किया गया। आचार्य अग्निमित्र शास्त्री के पौरिहित्य में आयोजित इस देवयज्ञ में राठौर समाज छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों ने वेद मंत्रों के उच्चारणपूर्वक आहुति प्रदान की।

इस अवसर पर यज्ञ की व्याख्या करते हुये वैदिक विद्वान आचार्य ने कहा कि यज्ञ में देवपूजा, संगतिकरण एवं दान तीनों का समावेश होता है। माता-पिता, आचार्य और विद्वानों की सेवा ही देवपूजा कहलाती है। संसार में प्राणीमात्र के भले के लिये विद्या, अन्न तथा धन का दान करना हमारा कर्त्तव्य होता है। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये आर्य समाज के प्रधान अर्जुन देव चड़ढा न कहा कि आप युवा देश का भविष्य हैं, सामाजिक परिवर्तन में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसलिये आप का सम्पूर्ण ध्यान केवल मात्र अपने अध्ययन पर होना चाहिये। अपने माता पिता के सपनों को साकार करें।

कार्यक्रम के संयोजक अरविन्द पाण्डेय ने बताया कि आओ यज्ञ करें कार्यक्रम के अन्तर्गत अलग अलग स्थानों, घरों, समूहों, छात्रावासों आदि में यज्ञ का आयोजन पिछले कई महीनों से किया जा रहा है। इसके प्रति लोगों में काफी उत्साह है। आर्य समाज विज्ञान नगर के प्रधान जे.एस.दुबे ने मेरे दाता के दरबार में सब लोगों का खाता ईश्वर भक्ति का भजन सुनाया। इस अवसर पर आर्य समाज के जे.एस. दुबे, राधावल्लभ राठौर, डा. परमानन्द, राजीव आर्य सहित बडी संख्या में हाडौती राठौर छात्रावास में रहने वाले नवयुवक विद्यार्थी उपस्थित थे।

-अरविन्द पाण्डेय प्रधान आर्य समाज

पंजाब में वेद प्रचार बढ़ाया जाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर के सभा भवन में वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल की अध्यक्षता में दिनांक 11-4-14 को बैठक हुई जिसमें अनेक प्रस्ताव रखे गए ताकि पंजाब में वेद प्रचार को बढ़ाया जा सके। सभा प्रधान श्री सुदर्शन जी शर्मा की भी यही इच्छा है कि पंजाब में वेद प्रचार खूब बढ़े।

इस बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय किए गए कि पंजाब में जो सभा की आर्यसमाज किसी कारण से नहीं चल रही है, उसको चलाया जाए। प्रत्येक समाजें एक वर्ष में दो बार (एक बार वेद प्रचार सप्ताह और एक बार वार्षिक उत्सव) अवश्य मनाए। साथ-साथ में महत्त्वपूर्ण पर्व मनाएं और रविवार को सत्संग अवश्य करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधीन जितनी भी शिक्षण संस्थाएं हैं-प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक। स्नातकोत्तर कॉलेज, बी. एड. कॉलेज सभी, आर्य पर्वों को मनाए और सप्ताह में एक दिन एक क्लास (लगभग 45 मिनट) का यज्ञ और प्रवचन के लिए अवश्य रखें। इसमें विद्यालय/कॉलेज के सभी विद्यार्थी और अध्यापक लैक्चरार, प्रिंसीपल आदि भाग लें। प्रतिदिन प्रार्थना के समय 5-10 मिनट नैतिक शिक्षा पर चर्चा अवश्य करनी चाहिए।

इस बैठक में श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी वेद प्रचार अधिष्ठाता, श्री विनोद भारद्वाज जी अधिष्ठाता साहित्य विभाग, श्री जोगेन्द्र सिंह जी कार्यालय अध्यक्ष, श्री सुरेश शास्त्री जी, श्री विजय कुमार जी शास्त्री, श्री जगत वर्मा जी, श्री अरूण कुमार जी वेदालंकार, श्री सतीश सुमन जी, श्री सुभाष राही जी आदि ने भाग लिया।

बैठक में शिक्षण संस्थाओं में वैदिक प्रश्नोत्तरी परीक्षा रखने का भी निर्णय वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी ने रखा। इसमें उच्च अंक लाने वाले विद्यार्थियों को इनाम देने का भी निर्णय किया गया। इसके लिए एक पुस्तक की रचना करने का भी निर्णय किया गया। इस पुस्तक की रचना करने के लिए श्री नारायण सिंह जी को सत्यार्थ प्रकाश से 100 प्रश्नोत्तर बनाने को कहा गया श्री विजय कुमार शास्त्री जी को श्री राम और श्री कृष्ण जी पर 100, 100 प्रश्नोत्तर बनाने को कहा, श्री सुरेश कुमार शास्त्री जी को महर्षि दयानन्द सरस्वती पर 100 प्रश्नोत्तर बनाने को कहा गया। इन सबकी एक पुस्तक बनाई जाएगी। प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में होंगे।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग उदयपुर राजस्थान का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग उदयपुर राजस्थान का वार्षिक चुनाव श्री अरविन्द त्यागी चुनाव अधिकारी द्वारा सम्पन्न करवाया गया। चुनाव में प्रधान श्री सुरेश चन्द्र चौहान, श्रीमती मनोरमा गुप्ता, मन्त्री श्री कैलाश मौर्य, उपमन्त्री श्री फतह लाल शर्मा, प्रचार मन्त्री श्री सत्यप्रिय आर्य, कोषाध्यक्ष श्री यशवंत श्रीमाली एवं पुस्तकालयाध्यक्ष श्री दीनदयाल शर्मा चुने गए। पूर्व प्रधान श्री प्रकाश श्रीमाली ने नवीन कार्यकारिणी को बधाई देते हुए समाज सेवा के कार्यों से जुड़ने का आह्वान किया। डा. प्रेमचन्द गुप्ता जी ने पारिवारिक यज्ञों को करवाने का निवेदन करते हुए इसे समाज के लिए महत्त्वपूर्ण बताया। मन्त्री श्री कैलाश मौर्य ने बताया कि चुनाव पूर्व यज्ञ, प्रार्थना, भजन एवं प्रवचन हुए। अंत में शांतिपाठ के साथ सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

-कैलाश मौर्य मन्त्री आर्य समाज

अन्तिम शोक दिवस

आर्य समाज दाल बाजार (स्वामी दयानन्द बाजार) लुधियाना के एडीटर एवं वरिष्ठ सदस्य श्री अयोध्या प्रकाश मल्होत्रा जी की धर्मपत्नी श्रीमती परीक्षा रानी का देहावसान 15 मई 2014 को लुधियाना में हो गया। उनका अन्तिम शोक दिवस 27 मई 2014 को 2 बजे से 3 बजे तक लायंज भवन किचलू नगर लुधियाना में होगा।

मातृ मंदिर कन्या गुरुकुल की संस्थापिका आचार्य डा. पुष्पावती जी का निधन

मातृ मंदिर कन्या गुरुकुल डी, 45/129 नई बस्ती रामापुरा वाराणसी की संस्थापिका अध्यक्षा आचार्य डा. पुष्पावती जी का दिन शुक्रवार दिनांक 2 मई 2014 की रात्रि में 10 बजे 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार दिन शनिवार दिनांक 3 मई 2014 को वाराणसी के राजा हरिश्चन्द्र घाट के गंगा तट पर पूर्ण वैदिक रीति से मातृ मंदिर कन्या गुरूकुल वाराणसी की ब्रह्मचारिणियों ने किया।

वैदिक शान्ति यज्ञ दिन रविवार दिनांक 11 मई 2014 को गुरूकुल प्रांगण में डा. गायत्री आर्या एवं डा. सरस्वती देवी चतुर्वेदा के आचार्यत्व में गुरुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा वेद पाठ एवं उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा हुई जिसमे विद्वानों एवं आर्यजनों ने परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे एवं उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल को निरन्तर प्रगति के पथ पर ले जाने की कामना की गई।

-गायत्री आर्या मुख्याधिष्ठात्री

आर्य समाज को एक मकान दान में मिला

आर्य समाज जंडियाला गुरु की शताब्दी समारोह में श्री डा. रविदत्त शर्मा सुपुत्र श्री ब्रह्मदत्त शर्मा जी ने सहर्ष घोषणा की कि उनका पैतृक मकान वह अपने दादा जी श्री मास्टर हरिश्चन्द्र शर्मा जी की स्मृति में आर्य समाज को दान देते हैं। इस पर सभी ने करतल ध्वनि से सवागत किया। उन्हें श्री स्वामी सदानन्द जी सरस्वती, श्री प्रेम भारद्वाज जी महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और श्री सरदारी लाल जी आर्य सभा उप प्रधान द्वारा स्मृति चिन्ह, सत्यार्थ प्रकाश, पटका देकर जयघोष के साथ सम्मानित किया गया।

-मंत्री आर्य समाज

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर का चुनाव

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर के वर्ष 2014-2016 के लिए पदाधिकारियों का चुनाव दिनांक 20-04-2014 रविवार को सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ जिसमें श्री ध्रुव मित्तल जी को सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया और उन्हें अन्य पदाधिकारी मनोनीत करने का अधिकार दिया गया। प्रधान ध्रुव मित्तल ने अपने अधिकार का प्रयोग करते हुए श्री रवि वासुदेवा को मन्त्री, श्री मुलखराज शर्मा को कोषाध्यक्ष तथा श्री राज कुमार को संयुक्त मन्त्री पद के लिए चयनित किया।

-राज कुमार संयुक्त मन्त्री

अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा का निर्वाचन

अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा का वार्षिक निर्वाचन गत 27-04-2014 को वर्ष 2014-2015 के लिए हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए:-प्रधान श्री रवि गुप्ता, महामन्त्री श्री जनमेजय राणा तथा कोषाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश। नवनियुक्त सभी पदाधिकारियों का हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

-जनमेजय राणा महामन्त्री

वर चाहिए

हिन्दू क्षत्रिय, सुन्दर सुशील कन्या शाकाहारी परिवार जन्म तिथि 1.11.1988, कद 5 फुट 1 इंच Msc. Bed (Math) सेवारत प्राइवेट स्कूल के लिये एक वर की आवश्यकता है। सम्पर्क के लिये फोन नम्बर 0181-2200031, मोबाइल 98156-06031

Email;bharatbhushannanda@yahoo.in

आर्य सी.सै.स्कूल लुधियाना का +2 का परीक्षा परिणाम शानदार रहा

आर्य सीनीयर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना का बाहरवीं का परीक्षा परिणाम 12-5-2014 को घोषित किया गया। जिसमें साईंस ग्रुप के कुल 28 विद्यार्थियों में से 25 विद्यार्थी पास हुए तथा पास प्रतिशत 89.28 प्रतिशत रहा। कामर्स ग्रुप के कुल 154 विद्यार्थियों में से 153 विद्यार्थी पास तथा पास प्रतिशत 99.85 प्रतिशत रहा। आर्टस ग्रुप में 161 विद्यार्थियों में से 155 विद्यार्थी पास हुए तथा पास प्रतिशत 96.23 प्रतिशत रहा। नतीजा अच्छा आने पर स्कूल की मैनेजर श्रीमती विनोद गाँधी जी ने प्रिंसिपल श्री विजय पाल दयौड़ा जी को बधाई दी और सभी अध्यापकों की प्रशंसा की।

-विजयपाल दयौड़ा कार्यकारी प्रिंसिपल

जे.डी.एन.आर्य गर्ल्ज कॉलेज गुरू नानक नगर पटियाला का +2 परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत

जे.डी.एन.आर्य गर्ल्ज कॉलेज गुरू नानक नगर पटियाला का +2 परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। कॉलेज में पढ़ने वाली 32 छात्राओं ने +2 बोर्ड की परीक्षा दी थी। जिसका परिणाम घोषित होने पर सभी छात्राएं अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो गई हैं। इस अवसर पर सभी उत्तीर्ण छात्राओं को तथा अध्यापकों को बधाई दी गई और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई।

आर्य समाज नई मण्डी मुजफ्फरनगर का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर 16 डी. दयानन्द मार्ग नई मण्डी मुजफ्फरनगर का चुनाव वर्ष 2014-2015 के लिए चुनाव अधिकारी बाबू जितेन्द्र कुमार एडवोकेट के निर्देशन में सर्वसम्मति से 27-04-2014 को प्रात: साप्ताहिक यज्ञ उपरान्त आर्य समाज के सभागार में श्री राजपाल सिंह चाहल एडवोकेट व श्री आनन्दपाल सिंह आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें श्री राजपालसिंह चाहल को संरक्षक, श्री आनन्दपाल सिंह आर्य को प्रधान, श्री आर.पी.शर्मा को मन्त्री तथा श्री गुलबीर सिंह आर्य को कोषाध्यक्ष चुना गया। सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का पुष्प माला पहनाकर स्वागत किया गया।

-आर.पी. शर्मा मन्त्री आर्य समाज

गुरूकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन (मथुरा) में प्रवेश प्रारम्भ

योगीराज भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली एवं युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द की दीक्षास्थली पवित्र ब्रज भूमि मथुरा में प्रखर राष्ट्रभक्त महाराजा श्री महेन्द्र प्रताप द्वारा प्रदत्त सुविस्तृत भूखण्ड में स्थित श्रद्धेय नारायण स्वामी जी की तपस्थली गुरूकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात ही विद्यार्थी कक्षा 6 एवं 7 में योग्यता के अनुसार प्रवेश दिया जा सकता है अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम 4 अध्याय कण्ठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा के उत्तीर्ण होने पर कक्षा 8 में भी प्रवेश पा सकता है। गुरूकुल में प्राच्य व्याकरण के साथ-साथ अन्य सभी विषयों का गहनता से अध्ययन कराया जाता है। अत: विद्यार्थी का मेधावी होना आवश्यक है। इसलिए अभिभावक मेधावी, सुशील विद्यार्थी को ही प्रवेश के लिए लाएं। गुरूकुलीय परिवेश पूर्णत: वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण है। इसके साथ ही भोजन, आवास एवं अध्ययनादि की व्यवस्था भी अति उत्तम है। आर्यजन इसका लाभ उठाकर अपनी संतानों को शिक्षित, सक्षम, संस्कारवान एवं चरित्रवान राष्ट्रभक्त तथा ऋषिभक्त बनाकर व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें। **-आचार्य हरिप्रकाश, प्राचार्य मोबाईल-9457333425**

आर्य समाज जंडियाला गुरु का शताब्दी समारोह सम्पन्न : नवनिर्मित भवन का भव्य उद्घाटन

आर्य समाज जंडियाला गुरु जिला अमृतसर का शताब्दी समारोह एवं नव निर्मित भवन का उद्घाटन 6 मई से 11 मई 2014 तक बड़ी श्रद्धा और धूमधाम से सम्पन्न हुआ। 6 मई से प्रातकाल चतुर्वेद पराया महायज्ञ के ब्रह्मा पं.श्री यतीन्द्र सिंह शास्त्री द्वारा बड़ी श्रद्धा से करवाया जाता रहा। जिसमें विभिन्न वर्गों के लोगों को यजमान बनाया गया। कुल 32 परिवार सपत्नीक यजमान बने। पहले सभी को यज्ञोपवीत धारण करवाया जाता रहा। यज्ञोपवीत की महत्ता बताते हुये ब्रह्मा जी ने बताया कि यज्ञोपवीत पहनने से ही व्यक्ति यज्ञ करने का अधिकारी होता है। यह हमें मातृ ऋण, पितृ ऋण एवं आचार्य ऋण से उऋण होने की याद दिलाता है। उन्होंने बताया कि यज्ञ की परिभाषा देवपूजा, संगतिकरण और दान है। संध्या प्रात: व सायं अवश्य करनी चाहिये। माता-पिता वृद्धों एवं विद्वानों की सेवा करना देवपूजा, अच्छे विद्वानों महापुरुषों की संगति करना और धर्म के लिये समाज के कल्याण के लिये अच्छे कार्यों के लिये दान देना यज्ञ है। रात्रि को भी श्री संदीप आर्य, श्री यतीन्द्र सिंह शास्त्री जी के भजन और श्री विजय कुमार शास्त्री जी ने वेदकथा करते हुये रामायण, महाभारत, गीता उपनिषदों आदि के उदाहरण देकर सब को कहा कि हमें संसार का उपकार करने के लिये हमेशा तत्पर रहना चाहिये। परमात्मा कण कण में विराजमान है इसलिये हमें पाप कर्म करने से बचना चाहिये। संदीप आर्य द्वारा प्रभु भक्ति, महर्षि दयानन्द के भजन एवं देश में फैली कुरीतियों, अंधविश्वास पाखण्ड के विरुद्ध लोगों को भजनों द्वारा जागरूक किया गया।

शनिवार को दोपहर बाद महिला सम्मेलन माता जगदीश रानी अमृतसर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें विशेष रूप से अमृतसर से महिलाओं ने भाग लेकर महर्षि दयानन्द जी के स्त्री जाति पर किये गये उपकारों का भजनों द्वारा वर्णन किया गया और सब को सत्संग में आने की प्रेरणा दी। शनिवार रात्रि विशेष रूप से श्री डा. राजेन्द्र वेदालंकार कुरुक्षेत्र से पधारे। उनका भी बहुत ही प्रभावशाली प्रवचन हुआ। उन्होंने कहा कि आज लोगों के दिमाग ऐसे मृत प्राय: हो गये हैं जिन्हें शुभ और अशुभ, धर्म और अधर्म का ज्ञान नहीं होता। आज लोग पत्थर हाथ में डाल कर अपना जीवन बदलना चाहते हैं परन्तु हमें पुरुषार्थ से जीवन को बदलना होगा। एक हाथ से हम पुरुषार्थ करें तो दूसरे हाथ में हमारी सफलता होगी।

11 मई 2014 रविवार को चतुर्वेद परायण महायज्ञ की पूर्णाहुति यज्ञ ब्रह्मा श्री यतीन्द्र शास्त्री द्वारा करवाई गई जिसमें सभी यजमान परिवार उपस्थित हुए। वातावरण बड़ा ही आनन्ददायक और सुगन्धित हो गया था। यज्ञ प्रार्थना के पश्चात स्वामी सदानन्द दयानन्द मठ दीनानगर द्वारा सभी यजमान परिवारों और वहां उपस्थित स्त्री पुरुष की दीर्घायु यश कीर्ति और समृद्धि का आशीर्वाद प्रदान किया गया।

यज्ञ के पश्चात ओ३म ध्वज आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, सभा उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य, और स्वामी सदानन्द जी द्वारा फहराया गया। जिसके पश्चात नव निर्मित भवन का उद्घाटन भी महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य और स्वामी सदानन्द जी द्वारा किया गया। आर्य समाज जंडियाला गुरु का उत्सव पहली बार आर्य समाज मंदिर के बाहर किया गया जोकि बहुत ही सफल रहा। श्री सरदारी लाल जी ने अपने सम्बोधन में घर घर हर परिवार, गली, मुहल्लों में जाकर सत्संग करने की प्रेरणा प्रदान की। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने सभा द्वारा किये गये कार्यों पर प्रकाश डाला और हर घर में वेद, सत्यार्थ प्रकाश रखने एवं पढ़ने की प्रेरणा दी। श्री डा. राजेन्द्र वेदालंकार जी ने धर्म परिवर्तन से हो रही समस्या पर जागरूक रहने की बात कही। श्री पंडित विजय कुमार शास्त्री द्वारा भी प्रभावशाली प्रवचन हुआ। अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वामी सदानन्द जी ने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब चैनल के बारे में जो भी मेरी सेवा लगाएगी मैं उसे सहर्ष पूरा करूंगा। उन्होंने शताब्दी समारोह की सफलता की सब को बधाई दी और कहा कि हमें महर्षि दयानन्द के स्वपनों को साकार करना है।

इस सम्मेलन में अमृतसर, तरनतारन, पट्टी, दीनानगर, पठानकोट, गुरदासपुर आदि से आर्य माताएं एवं बहिनें एवं पुरुष उपस्थित हुये और शताब्दी समारोह की शोभा बढ़ाई। इस उत्सव को सफल बनाने के लिये आर्य वीर दल, स्त्री आर्य समाज और सभी आर्य पुरुषों का पूरा पूरा सहयोग प्राप्त हुआ। मंदिर निर्माण के लिये सहयोग करने वाले सभी महानुभावों को स्मृति चिन्ह , सत्यार्थ प्रकाश, पटका देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के पश्चात ऋषि लंगर का प्रबन्ध किया गया था।

-स्वतंत्र कुमार आर्य मंत्री आर्य समाज

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।